भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग
लोक सभा
तारांकित प्रश्न संख्या 303
17 दिसंबर, 2024 को उत्तरार्थ

विषय: मृदा स्वास्थ्य की गुणवत्ता में गिरावट

***303. श्री ए. राजा:**

क्या कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार का ध्यान विशेषज्ञों द्वारा व्यक्त की गई इस चिंता की ओर गया है कि मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट से देश की 30 प्रतिशत भूमि प्रभावित हो रही है;

(ख) यदि हां, तो संधारणीय खेती के लिए मिट्टी की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए किए गए/सुझाए गए उपायों का ब्यौरा क्या है;

(ग) किसानों को उर्वरकों के संतुलित उपयोग, जैविक खेती को प्रोत्साहित करने और उचित मृदा प्रबंधन पद्धतियों के बारे में शिक्षित करके मृदा स्वास्थ्य को खराब होने से रोकने के लिए क्या कोई जागरूकता अभियान शुरू किया गया है; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री शिवराज सिंह चौहान)

(क) से (घ) : विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

"मृदा स्वास्थ्य की गुणवत्ता में गिरावट" के संबंध में दिनांक 17.12.2024 को उत्तर दिए जाने के लिए लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या 303 के भाग (क) से (घ) के संबंध में विवरण।

(क) एवं (ख) : सरकार मिट्टी की गुणवत्ता में आ रही गिरावट से अवगत है। इसके समाधान के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, सॉइल टेस्ट आधारित संतुलित और इंटीग्रेटेड न्यूट्रिएन्ट मैनेजमेंट की सिफारिश करती है। आईसीएआर ने सॉइल हेल्थ और फर्टिलिटी में गिरावट को रोकने के लिए पौधों के पोषक तत्वों के इन-ऑर्गनिक और ऑर्गनिक दोनों स्रोतों (खाद, बायो-फर्टिलाइजर आदि) के संयुक्त उपयोग और स्थान विशेष मिट्टी और जल संरक्षण उपायों का सुझाव दिया है। सरकार देश में किसानों को सॉइल हेल्थ कार्ड जारी करने में राज्य सरकारों की सहायता के लिए सॉइल हेल्थ और फर्टिलिटी स्कीम कार्यान्वित कर रही है। सॉइल हेल्थ कार्ड, सॉइल हेल्थ और फर्टिलिटी में सुधार के लिए ऑर्गनिक खाद और बायो-फर्टिलाइजर के साथ-साथ सेकेंडरी और माइक्रो न्यूट्रिएंट्स सहित रासायनिक उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग के द्वारा इंटीग्रेटेड न्यूट्रिएन्ट मैनेजमेंट को बढ़ावा देने में सहायता करते हैं। इस योजना के तहत अब तक 24.60 करोड़ सॉइल हेल्थ कार्ड बनाए गए हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद प्रदर्शन, सार्वजनिक अभियान, प्रशिक्षण और मीडिया के माध्यम से कृषि में उपयोग की जाने वाली फार्म यार्ड खाद, कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, हरी खाद, आयल/कंसेंट्रेटिड केक, बायो फर्टिलाइजर, बायोगैस वेस्ट आदि सॉइल हेल्थ को बेहतर बनाने/बनाए रखने के लिए ऑर्गनिक फर्टिलाइजर के उपयोग को बढ़ावा दे रहा है। बायो फर्टिलाइजर के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, आईसीएआर ने सॉइल बायो डाईवर्सिटी-बायो फर्टिलाइजर पर नेटवर्क परियोजना के तहत विभिन्न फसलों और मिट्टी के प्रकारों के लिए विशिष्ट बायो फर्टिलाइजरों के बेहतर और प्रभावी स्ट्रेन्स का विकास किया है। सरकार सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में परम्परागत कृषि विकास योजना और पूर्वोत्तर क्षेत्र जैविक मूल्य श्रृंखला विकास मिशन के माध्यम से सॉइल हेल्थ और जल प्रतिधारण में सुधार के लिए देश में प्राथमिकता के साथ ऑर्गनिक खेती को बढ़ावा दे रही है। योजनाओं के तहत ऑन-फार्म/ऑफ-फार्म ऑर्गनिक इनपुट मेजोरिटी बायो फर्टिलाइजर के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पशुधन एकीकृत खेती को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 25.11.2024 को राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को मंजूरी दी है, जिसमें बायोमास मल्चिंग, मल्टी-क्रॉपिंग सिस्टम, सॉइल ऑर्गनिक कंटेंट, सॉइल स्ट्रक्चर, न्यूट्रीशन में सुधार, मिट्टी की जल धारण क्षमता को बढ़ाने के लिए आन-फार्म तैयार प्राकृतिक खेती बायो-इनपुट का उपयोग जैसे कार्य शामिल हैं।

(ग) एवं (घ) : सॉइल हेल्थ एंड फर्टिलिटी स्कीम के अंतर्गत मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने के लिए फर्टिलाइजर के संतुलित उपयोग से संबंधित 07 लाख प्रदर्शन, 93,781 किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम और 7,425 किसान मेले आयोजित किए गए हैं। कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी और कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों को सलाह जारी की जाती है। इसके अतिरिक्त, 70,002 कृषि सखियों को सॉइल हेल्थ कार्ड सलाह जारी करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। सरकार धरती माता की रक्षा के लिए सॉइल हेल्थ के महत्व के बारे में छोटी आयु के स्कूली छात्रों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए 1020 स्कूलों में स्कूल सॉइल हेल्थ प्रोगाम भी चला रही है।

इस कार्यक्रम के तहत 1005 सॉइल लैब्स स्थापित की गई हैं और अब तक 125532 छात्रों का नामांकन किया जा चुका है। इसी तरह, कृषि विश्वविद्यालयों के लगभग 20 हजार स्नातक छात्रों के लिए आर.ए.डब्ल्यू.ई. (ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव) कार्यक्रम को सॉइल हेल्थ एंड फर्टिलिटी स्कीम के साथ एकीकृत किया गया है। दोनों कार्यक्रमों के तहत, छात्र और स्नातक मिट्टी के नमूने एकत्र कर रहे हैं और मिट्टी के नमूनों की जांच कर रहे हैं। इसके अलावा, एसएचसी के अनुसार छात्रों और स्नातकों के माध्यम से किसानों को सलाह जारी की जाती है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त, नेशनल ऑर्गनिक नेचुरल फार्मिंग सेंटर नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम, एक्सपोजर विजिट, कार्यशालाएं (किसान मेले) आदि आयोजित करता है ताकि किसानों को फसल चक्र, अवशेष प्रबंधन और सतत कृषि पद्धतियों जैसी सॉइल कन्जरवेशन तकनीकों के बारे में जागरूक किया जा सके। ये पहल किसानों को सॉइल हेल्थ और दीर्घकालिक कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए ऑर्गनिक और प्राकृतिक खेती के तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

*****